Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IV, Issue VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

जल–युद्ध : एक संभावना का अध्ययन

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IV, Issue VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

जल–युद्व : एक संभावना का अध्ययन

Abhishek Choubey[1] Yuti Patel[2]

[1]Research Scholar, CMJ University, Shillong, Meghalaya

[2]Research Scholar, CMJ University, Shillong, Meghalaya

लेख सार – पूरे विश्व में तरह–तरह से जिस प्रकार जल का दोहन हो रहा है, वह दिन दूर नहीं जब जल ही युद्व की पृष्ठभूमि में होगा । विकसित राष्ट्रों की औद्योगिक महत्वाकांक्षायें, भविष्य की जल–रणनीति, जल से सम्बन्धित मनोवैज्ञानिक–राजनैतिक जटिलताओं, आदि के अध्ययन उपरांत एक बात प्रत्यक्षतः सामने आती है कि अगर जल संरक्षण के सम्बन्ध में कोई ठोस योजना नहीं बनती है या किसी सार्वभौमिक चेतना का विकास नहीं होता है तो, वह दिन दूर नहीं जब जल समस्या युद्व का कारण बनेगा।

मुख्य शब्द – जल रणनीति, सार्वभौमिक चेतना

----------♦----------

विषय लेख

मानव जीवन के सर्वांगीण विकास में जल की भूमिका सबसे अग्रगण्य है। अगर विश्व में सभ्यताओं के विकास पर ऐतिहासिक दृष्टि डालें, तो हम पायेंगे कि सारी की सारी सभ्यताओं का विकास, किसी न किसी नदी के किनारे या पिफर समुद्र के किनारे ही हुआ। नील नदी, सिन्धु नदी, गंगा नदी, आदि नदियों का योगदान सभ्यता विकास में कापफी रहा है। आज भी, कई तरह से ये नदियॉ हमारी आधुनिक जीवन प्रणाली को मदद कर रही है।मिश्र की सभ्यता, मेसोमोटामिया की सभ्यता, व सिन्धुघाटी सभ्यता, आदि सारी की सारी सभ्यतायें नदियों के किनारे विकसित हुई । इन सभ्यताओं के, वहॉ विकसित होने के कारण थे, जल के किनारे होने के कारण मिलने वाली सुविधयें एवं उन सुविधओं द्वारा तन्त्रा का विकास।

आज भी जल उतना ही प्रासंगिक है जितना उन दिनों था, बल्कि आज तो इसकी आवश्यकता और भी ज्यादा है। आज के इस औद्योगिक दौर में वस्तुतः उद्योग का ढाँचा ही प्रसंस्करण ;च्तवबमेपदहद्ध पर आधरित है, जिसमें जल की भूमिका मुख्य होती है। किसी भी औद्योगिक प्रसंस्करण में जल ही मुख्य विन्दु है। उद्योग की अगर विवेचना करें तो हम पायेंगे कि औद्योगिक विकास की स्थापना में जल की भुमिका प्रमुख है। भविष्य में इसकी ज़रूरत और बढ़ेगी ही, घटने वाली नहीं। हम अंधधुंध तरीके से इस प्रकार जल का दोहन कर रहे हैं कि शायद पीने भर के लिये भी पानी न बचे।

शोध दृष्टि

सुबह जगने के बाद से शाम–रात्रि सोने तक मुख्यरूप से हमारी प्रत्येक क्रिया–प्रतिक्रिया में जल की भूमिका मुख्य होती है। शौच से लेकर स्वच्छता तक, भोजन पकाने व खाने से लेकर पचाने तक जल की भूमिका मुख्य होती है। व्यक्तिगत जीवन हो या सामुदायिक या पिफर औद्योगिकऋ प्रत्येक स्तर पर जीवन के निर्वहन में जल की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है, पूरे प्रथ्वी पर एक–तिहाई भाग में जल का पफैलाव व अस्तित्व है, लेकिन दुर्भाग्य की बात यह है कि विश्व में व्याप्त सम्पूर्ण जल की मात्राा का मात्रा 0ण्5ः नैसर्गिक रूप से पीने योग्य बचा है। बाकी को हमने ऐन केन प्रकारेण गंदा कर दिया है। पीने की बात तो दूर है, औद्योगिक प्रयोग में भी प्रदुषित जल व्यर्थ ही है। उद्योग को भी प्रदुषित जल नहीं चाहिए, बल्कि वहॉ भी एक उचित व निर्धरित मात्राा में जल की स्वच्छता की आवश्यकता होती है। औद्योगिक प्रसंस्करण में मशीन भी प्रदुषित जल स्वीकार नहीं करती, मानव शरीर कैसे करेगा?

शोध पृष्टभूमि

जिस प्रकार विश्व के कोने–कोने में जल की समस्या, आये दिन उभर कर सामने आ रही है, वह दिन दूर नहीं जब राष्ट्रों के बीच युद्व की पृष्टभुमि में जल ही होगा। आये दिन इस सम्बन्ध में अर्न्तराजकीय विवाद इसका उदाहरण है। कावेरी जल विवाद इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। समस्या की शुरूआत तो हो चुकी, और यह कोई नई समस्या नहीं है बल्कि यह जल–विवाद भारतवर्ष के कर्नाटक व तमिलनाडू राज्यों के बीच व्याप्त है। कर्नाटक राज्य की शिकायत यह रहती है कि उसको तमिलनाडू राज्य की अपेक्षा कम जल मिलता है। इस सम्बन्ध में, पहली बार 1892 तथा उसके बाद 1924 में करार ;एग्रीमेंटद्ध हुआ था, लेकिन आज दशकों बाद भी समस्या जस की तस हैऋ कोई ठोस समाधन सामने नहीं आया है। दोनों ही पक्ष अपने–अपने हितग्राहिता की बात करते हैऋ और इस प्रकार समाधन की समस्या व्याप्त है।

यह उदाहरण कापफी है, इस बात को सिद्व करने के लिए कि जल हमारे जीवन के अस्तितव के इतने ज़्यादा पार्श्व

में है कि इस पर काई भी वैकल्पिक समाधन, कहीं न कहीं, किसी न किसी तरह से हमें इस नैसर्गिक संसाध्न पर चेतनापूर्ण विचार द्वारा ही सम्भव बनाया जा सकता है, कूटनीति द्वारा कदापि नहीं।

सामुदायिक स्तर पर, कापफी वाकया सुनने को मिलता है कि जल विवाद में लोग झगड़ पड़े और हत्या हो गई। मध्यप्रदेश के भोपाल शहर में एसी कई घटनायें घटित हुई जिससे यह साबित होता है कि पानी के लिए खून भी बह सकता है।

www.ignited.in

भेपाल में दैनिक उपयोग के लिए जल संग्रहण में कई बार हत्या की वारदातें हुई। वहाँ, 14 जून 2009 को एक ऐसे ही विवाद में एक ही परिवार के तीन लोगों की हत्या हो गई। मौके पर लोग झगड़ पड़े और घटना घटित हो गई। यह कोई अकेला उदाहरण नहीं है जब जल के लिए मारामारी और हत्या की वारदातें हुई हों। आये दिन देश के किसी न किसी कोने में एसी घटनायें होती रहती है।

समुदायिक स्तर पर घटित हो रही ये घटनायें यहीं तक सीमित रहे इसकी कोई गारंटी नहीं। ये समस्याऐं जो जल–राजनीति से सम्बन्धित हैऋ विश्व स्तर पर व्याप्त है और इसके लिए अंदर ही अंदर रणनीतियॉ व कूटनीतियॉ तैयार की जा रही है कि कैसे विश्व के बचे हुए जल श्रोतों पर कब्जा जमा लिया जाये।

वैश्विक स्तर पर भी कापफी संख्या में राष्ट्रों के मध्य जल विवाद व्याप्त है। सीरिया व जॉर्डन का जल विवाद, भारत–नेपाल जल विवाद, भारत–बंगलादेश जल विवाद, तुर्की, सीरिया और इराक का जल विवाद यहॉ कापफी प्रासंगिक है।

जल संसाध्न व वैश्विक अर्थव्यवस्थाः

जल संसाध्न अनेक रूप से अर्थव्यवस्था व व्यापारिक गतिविध्यिों में मदद करता है।उनमें मुख्य हैं– मछली पालन व उसका व्यापार, कृषि, औद्योगिक उत्पादन, जल मनोरंजन व पर्यटन, जल–उत्पाद व्यापार, आदि। सम्पूर्ण विश्व में कम से कम कृषि सम्बन्धित कार्यकलाप व गतिविध्यिों में जल ही कृषि–उत्पादन का मुख्य कारक है। आज भी इतने ज्यादा वैज्ञानिक संसाध्नों के बावजूद कृषि उत्पादन के लिए जल ही सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण है।वर्षा– जल के बिना कृषि की परिकल्पना ही बेकार है।

वर्षाजल व कृषिः

वर्षा के द्वारा कृषि का उत्पादन एक अत्यन्त ही सुलभ, आसान व प्रकृति की देन है। पूरे विश्व में वर्षाजल कृषि के लिए एक वरदान के रूप में प्रयुक्त होता है। भारत की कृषि व्यवस्था तो आज भी अस्सी प्रतिशत वर्षाजल पर ही आधरित है। जिस वर्ष वर्षा की स्थिति अच्छी नहीं रहती है, उस वर्ष कृषि की स्थिति भी अच्छी नहीं रहतीऋ बुरी हो जाती है।

दूसरी कई, इनसे जुड़ी बातें हैं जो वर्षा जल पर आधरित हैं। जब पौध्े पर वर्षा का जल प्रपात होता है तो पौध्े को इससे और भी कई पफायदे मिलते हैं और इस प्रकार निषेचन तथा पफल व बीज उत्पादन प्रक्रिया में भी यह कापफी लाभदायक होता है। इस सम्बन्ध् में एक बात कापफी महत्वपूर्ण है कि जबसे जलचक्र में प्राकृतिक रूप से विघटन हुआ है, वर्षा भी कापफी प्रभावित हुई है, और इस प्रकार इसका श्रृखंलाबद्व दुष्परिणाम तमाम प्राकृतिक क्रियाओं पर पड़ा है। इसका दुष्परिणाम यह है कि कम वर्षा होने से सम्पूर्ण तन्त्रा ही प्रभावित व विघटित होने लगा है। पिछले कुछ दशकों में वर्षा संकट और अनिमितितायें इस ओर संकेत देती हैं कि प्रदुषण व प्राकृतिक विघटन प्रकृति के लिये कापफी खतरा है। वर्षा की अनियमितता के कारण भारतीय कृषि कापफी प्रभावित हुई है। अगर लागत कारक ;ब्वेज थ्ंबजवतद्ध की दृष्टि से भी देखा जाए तो वर्षाजल प्रपात कृषि के लिए कापफी उपयोगी है। यह कृषि का लाभदायता प्रदान करने में कापफी महत्वपूर्ण है।

जल संकट दूसरे भी उद्योग–ध्ंधे को बुरी तरह प्रभावित कर सकता है, खासकर बिजली उत्पादन में। जल विद्युत उत्पादन तो एक बहुत बड़ा सेक्टर है, जिसमें जल ही विद्युत उत्पादन का मुख्य कारक है। इसकी सम्पूर्ण प्रक्रिया में, जल की भूमिका ही मुख्य होती है।इसके अलावा, दूसरे अन्य कई उद्योग भी बुरी तरह से प्रभावित होंगे। रसायनिक उद्योग, होटल उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग, आदि में तो जल की भूमिका ही मुख्य होती है। इन उद्योगों से अगर जल को अलग कर दिया जाए, तो ये उद्योग एक कदम भी आगे नहीं बढ़ पायेंगे। आज सारे औद्योगिक राष्ट्रों की नजर जल की कूटनीति पर है।

तेल उत्पादित उर्जा का तो पिफर भी विकल्प ढूंढ लिया जाने की संभावना है। वैकल्पिक उर्जा श्रोत के रूप में कई अन्य विकल्प सामने हैऋ जबकि जल के सम्बन्ध् में ऐसा कोई भी विकल्प हो ही नहीं सकता। इस सम्बन्ध् में सोचना ही व्यर्थ है। औद्योगिक राष्ट्रों की आंतरिक विचार कूटनीति कहीं न कहीं इस सम्बन्ध् में कापफी सक्रिय है कि जल संसाध्न पर उनकी रणनीति अभी से ही अक्रामक हो जाए, ताकि भविष्य में भी अनकी दादागिरी चलती रहे, जैसा कि तेल के सम्बन्ध् में उनकी रही है। पहले, ओपेक;व्म्ब्द्ध पेट्रोलियम देशों पर सोवियत रूस का दबदबा था, अब अमेरिकी दादागिरी से शायद ही कोई भी बुद्विजीवी अंजान होगा। ओपेक देशों में, अमेरिका द्वारा राजनैतिक संरक्षण के नाम पर जो गंदी राजनीति थोपी गई है, इसका दुष्परिणाम भी सामने ही है। कुवैत–इराक युद्व, सद्वाम हुसैन का पतन, ईराक का किरकिरी बननाऋ इन सारे तथ्यों के पीछे कोई भी मंशा विश्व शांति के तरपफ नहीं था, बल्कि पेट्रोलियम के तरपफ रहा है, क्योंकि, इन विकसित राष्ट्रों को पता है कि पेट्रोलियम का उनके गिरफ्रत में नहीं रहने पर उनके औद्योगिक ढॉचे का क्या हाल होगा।

औद्यौगिक राष्ट्रों की नई चिन्ता :

अब औद्योगिक राष्ट्रों की नई चिंता जल है। उन्हें यह भली–भॉति पता है कि जल संकट का दुष्परिणाम उनके औद्योगिक ढॉचे को लड़खड़ा देगा। रणनीतियॉ बननी शुरू हो गई हैं। जिस तरह विश्व शांति के आड़ में ये समृद्व और महाबली देश अपने पेट्रोलियम महत्वाकांक्षा के तौर पर छोटे–छोटे राष्ट्रों को बलि का बकरा बनाते रहे हैंऋ वे जलसंचय–महत्वाकांक्षा के परिपेक्ष्य में भी वही कुकृत्य दुहरायेंगे। किसी न किसी रूप में इन शक्तिशाली राष्ट्रों की नेतृत्व घोषणा, भविष्य में जल संकट से उत्पन्न वैश्विक समस्याओं और जटिलताओं की तरपफ इशारा करती है। उन्हें आगाज़ का पता है। उन्हें ये भी पता है कि वे किस प्रकार भविष्य की रणनीति के लिए अभी से ही भूमिका तैयार कर सकते हैं।

इन राष्ट्रों का एक नव वर्ग ऐसा भी है जो जल–उत्पादन के व्यापारीकरण का अभिभाषक है। कहीं न कहीं उसने पहले पानी को गंदा किया, और अब वे डिब्बाबंद पानी बेचने की रणनीति बना रहे हैं। कुछ विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों का जल उत्पाद बाजार में खूबसूरत व सुसज्जित पैकेजिंग में आ चुका है। उनके दावे भी बड़े आकर्षित करने वाले हैं। उन उत्पादों के नाम भी बड़े रोचक और उस बाजार क्षेत्रा के संस्कृति से जुड़े होते हैं, जैसे– गंगा मिनरल वाटर, हिमालयन मिनरल वाटर, प्रिस्टाईन मिनरल वाटर, आदि।

पृष्टभूमि के कारकः

जल एवं पर्यावरण अर्न्तराष्ट्रीय कपेंफरेंस, 1992 के अनुसार, जल का दुरूपयोग व इसकी कमी भविष्य में सक्षम विकास और पर्यावरण संरक्षण में कापफी बाध्क सिद्व होगा। जल मानव जीवन के लिए एक बहुत ही अनमोल जीवन तत्व है, और इस प्रकार मानव की सारी गतिविध्यिॉ किसी न किसी रूप में जल से जुड़ी हुई है। दुर्भाग्यवश, जल एक पुर्ननवीनीकरण;त्मदमूंइसमद्ध करने योग्य संसाध्न नहीं है, अतः भविष्य में जल को लेकर कापफी विवाद हो सकता है, जो जल युद्व तक में बदल जाएगा।

भविष्य में जल विवाद अभी और भी ज्यादा गहरायेगा, क्योंकि जल संसाध्न की मॉग अभी भविष्य में बढ़ेगी ही। पीने के पानी की जरूरत तो जनसंख्या बढ़ने के साथ–साथ बढ़ ही रही है। स्वच्छता के लिए, व्यापारिक प्रयोग के लिए, उत्पादन प्रक्रिया के लिए, आदिऋ सर्वत्रा ही पानी की जरूरत पड़ती है और ये जरूरतें बढ़ती ही जा रही है, घटेंगी कभी नहीं। ये सारी की सारी जरूरतें, जो जल से जुड़ी हैं जब चरमोत्कर्ष पर पहुँचेंगी तो समाधन के रूप में शक्तिशाली देश ताकत का प्रयोग कर इस संसाध्न पर काबिज होना चाहेंगे और यहीं पर जलयुद्व की शुरूआत होगी।

निष्कर्ष :

हमें प्रत्येक स्तरऋ सामाजिक, राजनैतिक व वैश्विक पर एक जुट होकर, अभी से ही जल संकट न आये, इसके लिये रणनीति पर विचार करना होगा, नहीं तो यही संकट युद्व के रूप में परिवर्ति होगा, और विश्व विनाश का कारण बनेगा।